examtrix.com

संस्कृत शिक्षण

U-1

आस-पास की वस्तुओं / पशु-पक्षियों के संस्कृत नाम की जानकारी

पशुओं के नाम

अश्वः / अश्वः / घोटकः - घोड़ा
श्वानः / कुक्कुरः - कुत्ता
अजाः - बकरी
उष्ट्रः - ऊँट
भल्लूकः - भालू
शशकः - खरगोश
सिंहः - शेर
गजः / हस्ती = हाथी

गर्दभः / खरः - गधा
मृगः / हरिणः - हिरन
शूकरः - सुअर
चित्रकः - चीता
गौः - गाय
मूषकः - चूहा
वानरः / कपि - बन्दर
शृगालः - गीदड़

नकुलः - नेवला
मकरः - घड़ियाल
मीनः - मछली
वृषभः - बैल
दर्दुरः - मेढ़क

पक्षियों के नाम

उलूकः - उल्लू
कोकिलः - कोयल
कीरः / शुकः - तोता
गरालः - हंस
हंसः - हंस
वर्तकः / मसालः - बत्तख

कपोतः - कबूतर
काकः - कौआ
मयूरः - मोर
भ्रमरः - भौंरा
बकः - बगुला
चटकः - चिड़िया

पिपिलिका - चींटी
लूता - मकड़ी / चींटी
चटकः - चिड़िया

फलों के नाम

द्राक्षा - अंगूर
नारंगम् - नारंगी
कदलीफलम् - केला
दूर्वाबीजम् - अमरूद
श्रीफलम् - बेल
आम्रम् - आम
कर्कटिका - ककड़ी

दाडिमम् - अनार
सेवम् - सेव
अक्षोटम् - अखरोट
तरबूजम् - तरबूज
बदरीफलम् - बेर
कालिन्दम् - तरबूज
जम्बुफलम् - जामुन

For Hand Written Notes Contact @ vmentoracademy@gmail.com
Contact No.:+916290909894
vmentoracademy.com
www.examtrix.com

vmentoracademy.com
Scanned by CamScanner

अन्नो के नाम ⇒ + भोजन ⇒

अन्नम् - अन्न	मासान् - उड़द	तण्डुलः - चावल	सिता/शर्करा - चीनी
आढ़की - अरहर	गोधूम - गेहू	यवः - जौ	दधि - दही
कलाय - मटर	चणकः - चना	दृढलम्ः - दाल	ओदनम् - भात
चणकः - चना	रोटिका - रोटी	आज्यम्/घृतम् - घी	पायसम् - खीर

मोदक ↓ लड्डु

बीमारी के नाम ⇒

अतिसारः - दस्त	विषचिका - हैजा
कासः - खासी	पाण्डुः - पीलिया
शीतला - चेचक	पक्षाघातः - लकवा

सब्जियो के नाम ⇒

दर्विका - गोभी	तिष्यफला - आँवला
लतार्क - प्याज	अरिष्टम् - लहसुन
मुलकम् - मूली	तुम्बी - लौकी

फूलो के नाम ⇒

कुमुदनि - कुमुद की लता
स्थल पद्मम् - गुलाब
मालती - चमेली
इंदीवर - कमल
गंधु पुष्पम् - गेंदा
चम्पकः - चंपा

दैनिक उपयोग वस्तुएँ ⇒

इष्टिका - ईंट	शिल्पी - कारीगर
कर्तनी - कैंची	सूथपति - बढ़ई
छुरिका - चाकू	अयोधनः - हथौड़ा
सम्मार्जनी - झाड़ू	व्याधाः - शिकारी
सौचिकः - दर्जी	अश्मचूर्णम् - सीमेंट
आयसः - लोहा	वर्तिका - ब्रश

Questions :-

① खगाः - पक्षी / कुञ्जरः - हाथी / दाडिमः - अनार / गोधूमः - गेहू / सरसिजम्ः - कमल
नकुलः - नेवला / पिपिलिका - चीटी / अश्वत्थः - पीपल / बरगद / षोडशः - सोलह / घोटकः - घोड़ा
समाचारपत्रम् - समाचारपत्र / अश्रु - आँसू / न्यायालयः - न्यालय / श्वः - आनेवाला कलः
पितृव्यः = चाचा / पितामहः = दादा / धूमः - धुमपान / द्वारग - दरवाजा
मोदकः - लड्डु

For Hand Written Notes Contact @vmentoracademy@gmail.com
Contact No: +918290909894
vmentoracademy.com examtrix.com
DEEPAK KUMAR SHARMA
vmentoracademy.com

examtrix.com

U-2

एक से बीस तक की संस्कृत संख्याओ का ज्ञान

1 - एकः
2 - द्वौ
3 - त्रयः
4 - चत्वारः
5 - पंच
6 - षट्
7 - सप्त
8 - अष्ट
9 - नव
10 - दश
11 - एकादश
12 - द्वादश
13 - त्रयोदश
14 - चतुर्दश
15 - पंचदश
16 - षोडश
17 - सप्तदश
18 - अष्टादश
19 - नवदश / एकोनविंशति
20 - विंशतिः

U-3

संस्कृत शिक्षण की विधियाँ

वार्तालाप विधि :→ छात्रो को सहजता एंव सरलातपूर्वक संस्कृत भाषा की शिक्षा ग्रहण कराने तथा उन्हे संस्कृत भाषा के उपयोग हेतु प्रेरित करने के लिये वार्तालाप विधि श्रेष्ठ विधि है।

संस्कृत भाषा सीखने के चरण पढना, लिखना, बोलना, सुनना के आधार पर प्रशिक्षु आस-पास की वस्तुएँ, पशु-पक्षियो के नाम इत्यादि से समबन्धित संस्कृत शब्दो का प्रयोग करके वार्तालाप करे।

चित्र विधि :→ चित्र विधि के माध्यम से आस-पास की वस्तुओ, घरेलू आस-पास के सामानो का नाम इत्यादि का चित्र बनाकर चित्र की सहायता से उनसे परिचित कराये। चित्र देखने के बाद बच्चा सहज रूप से विषय से जुड़ता है।

प्रश्नोत्तर विधि :→ प्रश्नोत्तर विधि के अन्तरगत बच्चो के अलग-अलग ग्रुप बनाकर बच्चो से आस-पास की वस्तुओ, संख्याओ इत्यादि के संस्कृत नामो से समबन्धित प्रश्न पूछे। प्रश्नोत्तर विधि से छात्रो के अन्दर जिज्ञासा व उत्सुकता बनी रहती है।

प्रोजेक्ट विधि :→ संस्कृत शिक्षण की प्रोजेक्ट विधि के अन्तरगत आस-पास की वस्तुओ का वर्गीकरण कर शीर्षक एंव उपशीर्षक का निर्माण बच्चो से कराये। उदाहरण = शीर्षक - अस्माकं परिवेश
उपशीर्षक - अस्माकं जीव जन्तवः [गौ, वृषभः काकः]

For Hand Written Notes Contact @ vmentoracademy@gmail.com
Contact No: +91829090894
vmentoracademy.com examtrix.com

vmentoracademy.com
Scanned by CamScanner

examtrix.com

संज्ञा, लिंग एंव वचन

संज्ञा ⇒ जिससे किसी प्राणी, वस्तु या स्थान का बोध हो उसे संज्ञा कहते है।

उदाहरण:- गंगा:, हिमालय:, घोटक:, कोकिल:

व्यक्तिवाचक संज्ञा = जो शब्द किसी विशेष प्राणी, वस्तु अथवा स्थान के भाव का बोध कराते हो

ex:- सरदार पटेल, पहाड, जेल

जातिवाचक संज्ञा = जो शब्द किसी प्राणी, स्थान अथवा वस्तु की जाति या समूह का बोध कराते हो

ex:- पुष्पम्, पुस्तकम्, हिमालय:

भाववाचक संज्ञा :⇒ वो शब्द किसी भाव, गुण, दोष, स्वभाव का बोध कराये

व्यक्तिवाचक	जातिवाचक
मोहन, शाहनाज, पहाड, जेल	पुष्पम्, पुस्तकम्, कलमम्, श्यामवट:, सुधारखण्ड:, शुक:, मृग:, चटका:

लिंग ⇒ संज्ञा के जिस रुप से किसी व्यक्ति, वस्तु या स्थान के स्त्री या पुरुषवाचक होने के बोध होता है उसे लिंग कहते है।

लिंग का अर्थ होता है:- 'निशान'/चिह्न

लिंग उस चिह्न को कहते है जिससे किसी शब्द का पुरुषवाचक, स्त्रीवाचक, नपुंसवाचक होना सिद्ध हो।

पुल्लिंग :⇒ जिस शब्द से नर (पुरुष) जाति का बोध हो उसे पुल्लिंग कहते है।

उदाहरण :⇒

(A) धन, प्रत्यान्त शब्द, अचप्रत्यान्त शब्द = नर:, पाक:, विजय:, शोक:, विनय:, त्याग:, विहार:, भाव:

(B) अन् से समाप्त होने वाले शब्द = राजन्, आत्मन्, मातृन्, पितृन्, पठन्

(C) समुद्रवाची शब्द = समुद्र:, सिंधु:, सागर:, अवधि:

(D) देव:, विष्णु:, दानव:, असुर:, अमर:, राम:, रावण:, बालि:

(E) दिवस:, काल:, पक्ष:, मास:, वर्ष:, समय:

(F) इकारान्त शब्द = कवि:, मुनि:, ऋषि:, पति:, कपि:, वारिधि:, जलधि, हरि:

(G) पर्वतवाची शब्द = गिरि:, शैल, पर्वत:, अद्रि:

(H) मासवाचक = चैत्र:, वैशाख:, ज्येष्ठ:

(I) पर्वत, सागर, महाद्वीप व ग्रह के नाम

For Hand Written Notes Contact @ vmentoracademy@gmail.com
Contact No: +918290909894
vmentoracademy.com examtrix.com

vmentoracademy.com
Scanned by CamScanner

examtrix.com

स्त्रीलिंग ⇉ जिस शब्द से मादा (स्त्री) जाति का बोध हो उसे स्त्रीलिंग कहते हैं।

उदाहरण :→ देवी, नारी, गौरी, स्त्री

तिथिवाचक शब्द - प्रतिपदा, द्वितीया, तृतीया, पंचमी, पूर्णिमा

त्रिलोकी, गतिः, वृद्धिः, मतिः लघुता, सुन्दरता, लता, रमा, गंगा, यमुना, नर्मदा, कावेरी, सांझर झील, डल झील, (हिन्दी, अंग्रेजी, वाच, संस्कृत (भाषा), रीति, नीति, शान्ति etc

नपुंसक लिंग ⇉ ऐसे शब्द जिनसे ना तो नर (पुरुष) और ना ही मादा का बोध होता है नपुंसक लिंग कहते हैं।

उदाहरण :- जलम्, फलम्, नगरम्, पुस्तकम्, जीवितम्, राक्षस :, रोचितम्, मधुरम्, मधुरत्व, सौन्दर्यम्, माधुर्यम् etc

वचन : ⇉

शब्द के जिस रूप से एक या एक से अधिक संख्या का बोध हो उसे वचन कहते हैं।

उदाहरण :- बालकः पठति = एकवचन

बालकाः पठन्ति = बहुवचन

वचन के भेद : ⇉ संस्कृत में 3 वचन होते हैं।

(i) एकवचन (ii) द्विवचन (iii) बहुवचन

एकवचन : ⇉ संज्ञा के जिस रूप से किसी एक व्यक्ति या वस्तु का बोध होता है उसे एकवचन कहते हैं।

जैसे :- रामः, बालकः, वृक्षः, सिंहः

द्विवचन : ⇉ संज्ञा के जिस रूप में दो व्यक्तियों/वस्तु का बोध हो उसे द्विवचन कहते हैं।

जैसे :- छात्रौ, बालकौ, आवाम्

बहुवचन : ⇉ संज्ञा के जिस रूप से बहुत सारी व्यक्तियों/वस्तु का बोध हो उसे बहुवचन कहते हैं।

जैसे :- बालकाः, वयम्, रामाः etc.

वचन के नियम :

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
✱ मरणशील, वातः द्वयम्, द्वितयम्, त्रयम्, युग्मम्, युगलम्, कया सहस्रम् (हजार), नियुतम् (दस लाख), अयुतम्	द्वि, उभ, दम्पति	अस्मद्, कति [पञ्चम् से अष्टादशम्] तक के शब्द वर्ष, दशा, सिक्ता, समा दारा (पत्नी), प्राण, आयत

For Hand Written Notes Contact @ vmentoracademy@gmail.com
Contact No. +91 8290909894
vmentoracademy.com examtrix.com

vmentoracademy.com
Scanned by CamScanner

examtrix.com

संज्ञा एंव सर्वनाम के सभी विभक्तियों तथा वचनों का ज्ञान

विभक्तियाँ :-

संस्कृत मे कारक को ही विभक्ति कहते है। क्रिया के साथ सीधा सम्बन्ध रखने वाले विभक्ति युक्त रूपों को कारक कहतेहै। विभक्ति निम्न प्रकार से है।

विभक्ति	कारक	चिह्न (परसर्ग)
प्रथमा	कर्ता	ने
द्वितीया	कर्म	को
तृतीया	करण	से, के, साथ, द्वारा
चतुर्थी	सम्प्रदान	के लिये
पन्चमी	अपादान	से (अलग होने मे)
षष्ठी	सम्बन्ध	का, की, के, रा, री, रे
सप्तमी	अधिकरण	मे, पे, पर
सम्बोधन	सम्बोधन	हे!, अरे!, ओ!

राम :- (अकारान्त)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	रामः	रामौ	रामाः
द्वितीया	रामम्	रामौ	रामान्
तृतीया	रामेण	रामाभ्याम्	रामैः
चतुर्थी	रामाय	रामाभ्याम्	रामेभ्यः
पंचमी	रामात्	रामाभ्याम्	रामेभ्यः
षष्ठी	रामस्य	रामयोः	रामाणाम्
सप्तमी	रामे	रामयोः	रामेषु
सम्बोधन	हे राम	हे रामौ	हे रामाः

Written and Written Notes Contact @ vmentoracademy@gmail.com
Contact No:+918290909094 vmentoracademy.com examtrix.com

vmentoracademy.com

Scanned by C

examtrix.com

सरित् (नदी) (ई-स्त्रीलिंग) / गुरु (ऊ॰)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	नदी	नद्यौ	नद्यः
द्वितीया	नदीम्	नद्यौ	नदीः
तृतीया	नद्या	नदीभ्याम्	नदीभिः
चतुर्थी	नद्यै	नदीभ्याम्	नदीभ्यः
पञ्चमी	नद्याः	नदीभ्याम्	नदीभ्यः
षष्ठी	नद्याः	नद्योः	नदीनाम्
सप्तमी	नद्याम्	नद्योः	नदीषु
सम्बोधन	नदि	नद्यौ	नद्यः

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	गुरुः	गुरू	गुरवः
द्वितीया	गुरुम्	गुरू	गुरून्
तृतीया	गुरुणा	गुरुभ्याम्	गुरुभिः
चतुर्थी	गुरवे	गुरुभ्याम्	गुरुभ्यः
पञ्चमी	गुरोः	गुरुभ्याम्	गुरुभ्यः
षष्ठी	गुरोः	गुर्वोः	गुरूणाम्
सप्तमी	गुरौ	गुर्वोः	गुरुषु
सम्बोधन	गुरो	गुरू	गुरवः

पिता (आ) पुल्लिंग

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	पिता	पितरौ	पितरः
द्वितीया	पितरम्	पितरौ	पितॄन्
तृतीया	पित्रा	पितृभ्याम्	पितृभिः
चतुर्थी	पित्रे	पितृभ्याम्	पितृभ्यः
पंचमी	पितुः	पितृभ्याम्	पितृभ्यः
षष्ठी	पितुः	पित्रोः	पितॄणाम्
सप्तमी	पितरी	पित्रोः	पितृषु
सम्बोधन	हे पितः	हे पितरौ	हे पितरः

धातु :

धातु शब्द 'धा' में 'तुं' प्रत्यय जोड़ने से बना है। संस्कृत व्याकरण में क्रियाओं को मूल रूप से धातु कहते हैं। धातु ही संस्कृत शब्दों के निर्माण हेतु मूल तत्व है।

(*) काल एवं अवस्था के रूप में इनका रूप 10 लकारों में होता है।

लकार: काल एवं अवस्था के रूप में धातुओं का रूप 10 लकारों में होता है। संस्कृत में कुल 10 लकार हैं।

(*) इनका रूप तीन पुरुषों के तीन वचनों में चलता है।

Main (5) मुख्य = 5

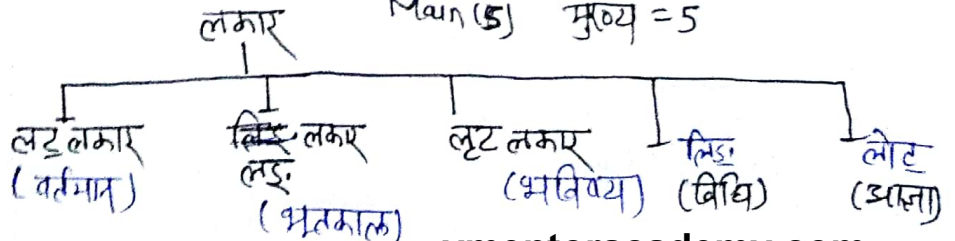

For Hand Written Notes Contact @ vmentoracademy@gmail.com
Contact No: +918290903891
vmentoracademy.com examtrix.com
vmentoracademy.com
Scanned by CamScanner

examtrix.com

उदाहरण (धातु रूप) :⇒

पठ् (पढना) धातु

लट् लकार (वर्तमान)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पठति	पठतः	पठन्ति
मध्यम पुरुष	पठसि	पठथः	पठथ
उत्तम पुरुष	पठामि	पठावः	पठामः

लृट् लकार (भविष्य) ⇒

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पठिष्यति	पठिष्यतः	पठिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	पठिष्यसि	पठिष्यथः	पठिष्यथ
उत्तम पुरुष	पठिष्यामि	पठिष्यावः	पठिष्यामः

लङ् लकार (भूतकाल) ⇒

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अपठत्	अपठताम्	अपठन्
मध्यम पुरुष	अपठः	अपठतम्	अपठत
उत्तम पुरुष	अपठम्	अपठाव	अपठाम

NOTE:-

① हस् (हंसना), धाव् (दौड़ना), पच् (पकाना), वद् (बोलना), नम् (नमस्कार करना), खाद् (खाना), क्रीड् (खेलना), चल् (चलना)

इन सबका रूप पठ् धातु की तरह ही चलेगा।

② कुछ धातुओं के अर्थ बदल जाते हैं।

दृश - पश्य् - देखना
पा - पिब् - पीना
स्था तिष्ठ - बैठना
प्रच्छ - पृच्छ - पूछना
दा - यच्छ - देना

इनका रूप भी पठ् की तरह चलेगा

सर्वनाम

पुरुष	लिंग	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
~~प्रथम पुरुष~~	पुल्लिंग	सः (वह)	तौ (वे दोनों)	ते (वे सब)
----	स्त्रीलिंग	सा (वह)	ते (वे दोनों)	ताः (वे सब)
---	---	अहम् (मैं)	आवाम् (हम दोनों)	वयम् (हम सब)
		त्वम् (तुम)	युवाम् (तुम दोनों)	यूयम् (तुम सब)

For Hand Written Notes Contact @ vmentoracademy@gmail.com
Contact No - +91 8290909894
vmentoracademy.com
examtrix.com

vmentoracademy.com
Scanned by CamScanner

examtrix.com

लिङ् लकार: (विधि / सम्भावना) (पठ् धातु)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पठेत	पठेताम्	पठेयु:
मध्यम पुरुष	पठे:	पठेतम्	पठेत
उत्तम पुरुष	पठेयम्	पठेव	पठेम

लिङ् लकार

लोट् लकार (आज्ञा) पठ् धातु

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पठतु	पठताम्	पठन्तु
मध्यम पुरुष	पठ	पठतम्	पठत
उत्तम पुरुष	पठानि	पठाव	पठाम

गम् धातु रूप

(1) लट् लकार (वर्तमान)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	गच्छति	गच्छत:	गच्छन्ति
मध्यम पुरुष	गच्छसि	गच्छथ:	गच्छथ
उत्तम पुरुष	गच्छामि	गच्छाव:	गच्छाम:

(2) लृट् लकार [भविष्य]

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	गमिष्यति	गमिष्यत:	गमिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	गमिष्यसि	गमिष्यथ:	गमिष्यथ
उत्तम पुरुष	गमिष्यामि	गमिष्याव:	गमिष्याम:

For Hand Written Notes Contact @ vmentoracademy@gmail.com
Contact No: +918290909604
vmentoracademy.com examtrix.com

vmentoracademy.com
Scanned by CamScanner

examtrix.com

(3) लङ् लकार (भूतकाल)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अगच्छत्	अगच्छताम्	अगच्छन्
मध्यम पुरुष	अगच्छः	अगच्छतम्	अगच्छत
उत्तम पुरुष	अगच्छम्	अगच्छाव	अगच्छाम

(4) लोट् लकार (आज्ञा)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	गच्छतु	गच्छताम्	गच्छन्तु
मध्यम पुरुष	गच्छ	गच्छतम्	गच्छत
उत्तम पुरुष	गच्छानि	गच्छाव	गच्छाम

(5) लिङ् लकार (विधि)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	गच्छेत्	गच्छेताम्	गच्छेयुः
मध्यम पुरुष	गच्छेः	गच्छेतम्	गच्छेत
उत्तम पुरुष	गच्छेयम्	गच्छेव	गच्छेम

संज्ञा व सर्वनाम शब्दो को छाटना

ex:- निम्न में से संज्ञा व सर्वनाम को अलग-अलग छाँटे

[राम, हरि, गुरु, सर्व, तद्, युष्मद्, अस्मद्, अहम्, आवाम्, नौ]

{ संज्ञा - राम, हरि, गुरु
सर्वनाम :- सर्व, तद्, युष्मद्, अस्मद्, अहम्, आवाम्, नौ }

For Hand Written Notes Contact No: +918290903894 vmentoracademy.com Contact@vmentoracademy@gmail.com examtrix.com

vmentoracademy.com
Scanned by CamScanner

examtrix.com

संज्ञा एंव सर्वनाम शब्दो का प्रथम, मध्यम व उत्तम पुरुष के साथ प्रयोग

उदाहरण

लट् (लट्) (वर्तमान) पठ् (पढना)

सः पठति (वह पढता है)	तौ पठतः (वे दोनो पढते है)	ते पठन्ति [वे सब पढते है]
सा पठति (वह पढती है)	ते पठतः (वे दोनो पढती है)	ताः पठन्ति (वे सब पढती है)
त्वं पठसि [तुम पढते हो]	युवां पठतः [तुम दोनो पढते हो]	युयम् पठथ [तुम सब पढते हो]
अहं पठामि [मै पढता हू]	आवाम् पठावः [हम दोनो पढते है]	वयं पठामः [हम सब पढते है]

लृट् (भविष्य)

वद् (बोलना)

सः वदिष्यति (वह पढेगा)	तौ वदिष्यतः (वे दोनो पढेगे)	ते वदिष्यन्ति (वे सब पढेगे)
त्वम् वदिष्यसि [तुम पढोगे]	युवाम् विदिष्यथः [तुम दोनो पढोगे]	युयम् वदिष्यथ (तुम सब पढोगे
अहम् वदिष्यामि (मै पढूगा)	आवाम् वदिष्यावः [हम दोनो पढेगे]	वयम् वदिष्यामः [हम सब पढेगे]

लङ् लकार (भूतकाल) वद् (बोलना)

सः अवदत् [वह पढता था]	तौ अवदताम् [वे दोनो पढते थे]	ते अवदन् (वे सब पढते थे)
त्वम् अवदः [तुम पढते थे]	युवाम् अवदम् [तुम दोनो पढते थे]	युयम् अवदत् (तुम सब पढते थे)
अहम् अवदत् [मै पढता था]	आवाम् अवदाव [हम दोनो पढते थे]	वयम् अवदाम [हम सब पढते थे]

कारक तथा संस्कृत भाषा मे इसका प्रयोग :-

कारक :- किसी वाक्य मे संज्ञा या सर्वनाम का क्रिया के साथ समबन्ध कारक कहलाता है। कारक यह इंगित करता है कि वाक्य मे संज्ञा / सर्वनाम का क्या कार्य है।

(*) संस्कृत भाषा मे 6 कारक होते है।

(i) कर्ता (ii) कर्म (iii) करण (iv) सम्प्रदान (v) अपादान (vi) अधिकरण

संस्कृत भाषा मे प्रयोग ⇒ "छात्र ने पढ पढा"

छात्र (ने) — कर्ता चिन्ह कारक, प्रथम विभक्ति अतः छात्र शब्द का रूप प्रथम विभक्ति एकवचन = छात्रः

छात्रः पत्र अपठत्

For Hand Written Notes Contact @vmentoracademy@gmail.com
Contact No. +918290909894
vmentoracademy.com examtrix.com

vmentoracademy.com
Scanned by CamScanner

examtrix.com

संभाव शिक्षण विधाएँ

संस्कृत शिक्षण मे दृश्य-श्रव्य उपकरण :⇒

दृश्य श्रव्य उपकरण

- दृश्य साधन
  - पाठ्य पुस्तक, श्यामपट्ट, चित्र, चार्ट, प्रतिरूप, प्रोजेक्टर
  - वे साधन जिन्हे देखकर बालक सीखने मे सहायता प्राप्त करता है।
- श्रव्य साधन
  - रेडियो, टेपरिकार्डर, ग्रामोफोन
  - वे साधन जिन्हे सुनकर बालक को पाठ्यवस्तु सीखने मे सहायता मिलती है।
- दृश्य-श्रव्य साधन
  - नाटक, टेलिविजन, फिल्म, स्ट्रिप, शिक्षाप्रद फिल्म
  - वे उपकरण जो दिखाई भी देते है और सुनाई भी देते है।

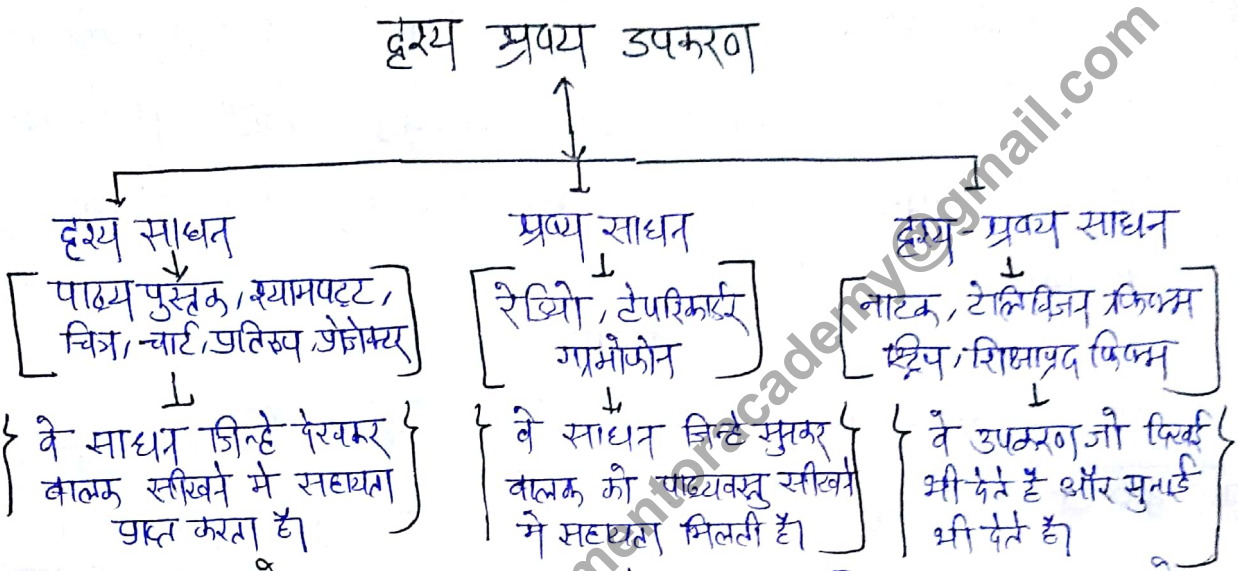

दृश्य-श्रव्य उपकरणो का महत्व :⇒

संस्कृत शिक्षण मे दृश्य-श्रव्य उपकरणो का निम्न महत्व है।

(i) पाठ्य वस्तु को रोचक, सार्थक एंव बोधगम्य बनाने हेतु
(ii) दिये गये ज्ञान को सुदृढ और चिरस्थायी बनाने हेतु
(iii) छात्रो को सक्रिय रखने हेतु
(iv) बालक का ध्यान केन्द्रित करने हेतु

संस्कृत शिक्षण मे वीडियो क्लिप का महत्व :⇒

(i) इसमे बहुत बडी लाईब्रेरी को छोटी डिस्क पर उतारा जा सकता है।
(ii) भण्डारण हेतु कम स्थान की आवश्यकता होती है।
(iii) यह बहुत सस्ती है और अधिक संख्या मे बनाई जा सकती है।
(iv) डिस्क के विभिन्न अंशो तक फारवर्ड और बैकवर्ड क्रिया द्वारा पहुचने की सुविधा।

संस्कृत शिक्षण मे प्रयुक्त उपकरण :⇒

(A) श्यामपट्ट :⇒ श्यामपट्ट को महत्वपूर्ण दृश्य उपकरण माना जाता है। यह विषयवस्तु को मानस पटल पर अंकित करने मे सहायता देता है। संस्कृत शिक्षक इसका उपयोग शब्दार्थ, शब्द खंड, सन्धि विच्छेद, उपसर्ग एंव प्रत्यय इत्यादि के स्पष्टीकरण हेतु करता है।

For Hand Written Notes Contact @ vmentoracademy@gmail.com
Contact No. +91-8290909894
vmentoracademy.com examtrix.com

vmentoracademy.com
Scanned by CamScanner

examtrix.com

(B) चार्ट :⇒ चार्ट उस प्रदर्शनात्मक साधन को कहते हैं जिसमें तथ्यों और क्रियाओं का समन्वय छात्रों को अधिक सुगमता प्रदान करता है। संस्कृत शिक्षण में भाव्य प्रस्तावना संबंध व्याकरणिक नियमों को स्पष्ट करने हेतु चार्ट बहुत उपयोगी है। संधि-विच्छेद, उपसर्ग समास इत्यादि समझने हेतु इसकी महत्ता है।

वाचन :-

आदर्श वाचन :⇒

शिक्षक द्वारा किये जाने वाला वाचन आदर्श वाचन कहलाता है यह बालक के लिये आदर्श रूप में होता है।

(*) अध्यापक द्वारा किये गये वाचन को आदर्श वाचन इसलिये कहा जाता है क्योंकि अध्यापक वाचन में कोई त्रुटि नहीं रहती है तथा अध्यापक आदर्श वाचन के छात्रों को ध्यान में रखते हुये वाचन करता है।

अनुकरण वाचन :⇒

छात्रों द्वारा किये जाने वाला वाचन जो अध्यापक के आदर्श वाचन का अनुकरण करके किया जाता है अनुकरण वाचन कहलाता है।

उसमें छात्र अध्यापक द्वारा अनुकरण में प्रयोग किये गये छात्रों को ध्यान में रखकर वाचन करता है।

सस्वर वाचन :⇒

उचित लय के साथ सुन्दर एवं शुद्ध स्वर के साथ किया गया वाचन सस्वर वाचन कहलाता है।

सस्वर वाचन में निम्न बातों का ध्यान रखा जाता है।

(*) सस्वर वाचन भावानुकूल करना चाहिये।

(*) सस्वर वाचन करते समय विराम चिन्हों का ध्यान रखना चाहिये।

(*) सस्वर वाचन में शुद्धता और स्पष्टता का ध्यान रखना चाहिये।

For Hand Written Notes Contact @ vmentoracademy@gmail.com
Contact No: +918290098941
vmentoracademy.com examtrix.com

vmentoracademy.com
Scanned by CamScanner